शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह - अक्टूबर, 2023

नवम वर्ष अंक – 05

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक: FLN के लक्ष्य – चालीस दिन का चेलेंज

मूलभूत साक्षरता एवं गणितीय कौशल विकास से संबंधित लक्ष्यों को सभी बच्चों में 2026-27 तक प्राप्त करना है. अभी हमारे राज्य में NAS एवं ASER सर्वे में हमारी स्थिति बहुत खराब दिखाई देती है और हम लक्ष्य से बहुत दूर हैं, अतः जिस गति से हम चल रहे हैं वैसे ही चलते रहेंगे तो निर्धारित समय सीमा में हम कभी भी लक्ष्य के करीब भी नहीं पहुंच सकेंगे. हमें छलांग लगाने की आवश्यकता है ताकि टीम वर्क से एक साथ मिलकर हम अपने राज्य में बच्चों की स्थिति में कम समय में ही आशातीत सुधार दिखा सकें. इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर छत्तीसगढ़ में निपुण भारत कार्यक्रम को छलांग (Chhattisgarh Language and Numeracy Gain-CHHALANG) के नाम से संचालित किये जाने का निर्णय लिया गया है.

छलांग कार्यक्रम हेतु लक्ष्य समूह:

मूलभूत साक्षरता एवं गणितीय कौशल विकास (FLN) हेतु छलांग कार्यक्रम में लक्ष्य समूह इस प्रकार होगा-

- आँगनबाडी में अंतिम वर्ष एवं बालवाडी में अध्ययन कर रहे सभी बच्चे
- कक्षा पहली से तीसरी तक अध्ययन कर रहे बच्चे
- आपके क्षेत्र में छह से नौ आयु वर्ग के सभी बच्चे भले ही वे स्कूल में दर्ज न हों (शाला त्यागी/ अप्रवेशी)
- आगे की कक्षाओं के बच्चे यदि उनकी बुनियादी दक्षताएं कमजोर हों
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चे जिन्हें सीखने हेतु विशेष तौर-तरीकों की आवश्यकता हो (CWSN)

चयनित लर्निंग आउटकम:

इस कार्यक्रम के अंतर्गत **प्रथम चरण में** राज्य में कक्षा तीन तक के सभी बच्चों में निम्नलिखित दक्षताओं को हासिल करवाना है-

कक्षा एवं आयु वर्ग	भाषा	गणित
बालवाटिका 5-6 आयु वर्ग	अक्षरों एवं संगत ध्वनियों को पहचानना कम से कम दो अक्षर वाले सरल शब्दों को पढ़ना	10 तक के अंकों को पहचानना और पढ़ना एक क्रम में घटनाओं की संख्या, वस्तुओं, आकृतियों, घटनाओं को व्यवस्थित करना
कक्षा एक 6-7 आयु वर्ग	उम्र के अनुसार छोटे अपरिचित पाठ से वाक्य जिनमें चार-पांच सरल शब्द हों, अर्थ समझकर पढ़ पाना	99 तक की संख्याएं पढ़े और लिखे सरल जोड़ और घटाव कर सके
कक्षा दो 7-8 आयु वर्ग	अर्थ समझते हुए किसी पैरा को 40-60 शब्द प्रति मिनट की स्पीड से पढ़ सकता है	999 तक की संख्याएं पढ़े और लिखे 99 तक की संख्याएं घटा सकते हैं
कक्षा तीन 8-9 आयु वर्ग	अर्थ समझते हुए किसी पैरा को 60 शब्द प्रति मिनट की स्पीड से पढ़ सकता है	9999 तक की संख्याएं पढ़े और लिखे सरल गुणा की समस्याओं को हल कर सकना

आप देख सकते हैं कि प्रत्येक कक्षा में हिन्दी एंव गणित में केवल दो-दो दक्षताओं पर ध्यान देना है. अभी हम देखते हैं कि बहुत लंबी अवधि तक शालाओं में रहने के बावजूद बहुत मामूली एवं बेसिक चीजें भी हमारे बच्चे सीख नहीं पाते. यह स्थिति अत्यंत दुर्भाग्यजनक है.

अब और आगे ये सब नहीं होना चाहिए, ऐसा बिलकुल नहीं चलना चाहिए. हमारे पास संकुल समन्वयक एवं बच्चों को सिखाने हेतु शिक्षकों की बढ़िया टीम है जो थोड़ा ध्यान देकर काम करें तो हमारा राज्य बुनियादी दक्षताओं के मामले में छलांग लगा सकता है. क्या आप नहीं चाहेंगे कि आपके राज्य, आपके क्षेत्र में अब इस प्रकार की दुर्भाग्यजनक स्थिति न हो और सभी बच्चों में बुनियादी दक्षताएं चालीस दिनों के भीतर सभी बच्चों में हासिल हो जाए.

एजेण्डा दो: छलांग कार्यक्रम हेतु शाला एवं संकुल स्तर पर अपेक्षित गतिविधियाँ

छलांग कार्यक्रम के अंतर्गत मूलभूत साक्षरता एवं गणितीय कौशल विकास (FLN) से संबंधित लक्ष्यों को कम से कम समय में प्राप्त करने हेतु आपको निम्नलिखित प्रयास करने होंगे-

- प्रत्येक संकुल में भाषा एवं गणित के लिए एक एक **मेंटर को अपने संकुल में FLN के लक्ष्य प्राप्ति की पूरी जिम्मेदारी** देनी होगी. इसके लिए उनके साथ मिलकर रणनीति निर्धारित कर ली जाए
- संकुल स्तर पर मेंटर और मेंटी आपस में मिलकर अपने संकुल के सभी स्कूल एवं क्षेत्र के लक्ष्य समूह की पहचान कर उनमें निर्धारित दक्षताएं प्राप्त करने हेतु समयसीमा का निर्धारण करें. वैसे इस कार्यक्रम के लिए **चालीस दिन का चैलेन्ज** जैसा नाम देकर काम शुरू किया जा सकता है
- आपकी अनुपस्थिति एवं अन्य कार्यों में व्यस्तता के दौरान भी बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रखने हेतु समुदाय से, माताओं से एवं बड़ी कक्षाओं के बच्चों से सहयोग लेंगे
- संकुल स्तर पर प्रत्येक कक्षा में भाषा एवं गणित के लिए निर्धारित दक्षताओं को सीखने के लिए आसान एवं **प्रभावी गतिविधियों का संकलन** कर उन पर शिक्षकों के साथ अभ्यास करवाते हुए कक्षा में उपयोग हेतु मेंटर की देखरेख में तैयारी करवाएं
- प्रत्येक दक्षता पर **बच्चों के साथ अभ्यास** के लिए भी ढेर सारे उदाहरण एवं अभ्यास सामग्री मिलकर तैयार करें
- मुस्कान पुस्तकालय में उपलब्ध पठन सामग्री को प्रतिदिन प्रत्येक बच्चे को पढने का अवसर देवें एवं समझ के स्तर की जाँच के लिए कुछ प्रश्न पूछकर देखें. बच्चों द्वारा नियमित पठन के अभ्यास हेतु **सौ दिन सौ कहानियाँ** जैसे कार्यक्रम का संचालन करें
- शाला प्रबन्धन समिति, पालकों, बड़ी कक्षा के विद्यार्थियों एवं शिक्षा में रुचि लेने वाली टीम को क्षेत्र में **बच्चों की नियमित उपस्थिति, शाला से बाहर के बच्चों** को इन दक्षताओं को सीखने के अवसर देने हेतु आवश्यक व्यवस्थाएं करने हेतु सहयोग देवें
- बड़ी कक्षा के विद्यार्थियों को आंगनबाडी से लेकर कक्षा तीन तक कुल बच्चों की संख्या के आधार पर एक एक **बड़े बच्चे के पास अधिकतम पांच पांच बच्चों को सिखाने**, अभ्यास करवाते हुए आकलन कर दक्षता हासिल हो जाने की पुष्टि करने की जिम्मेदारी देवें
- प्रत्येक दक्षता की जाँच अथवा **आकलन के लिए भी ढेर सारे प्रश्न** बनाकर रखे. छोटी कक्षाओं में शिक्षक पॉकेट बोर्ड एवं फ्लेश कार्ड का उपयोग कर अभ्यास एवं आकलन दोनों कार्य कर सकते हैं.

- इस पूरे कार्यक्रम में आपको निम्नलिखित हितग्राहियों को सक्रिय रूप से जोड़ना होगा-
    - कक्षा शिक्षक एवं प्रधानपाठक: चालीस दिनों तक नियमित अध्यापन के साथ चयनित बिन्दुओं पर फोकस होकर काम
    - शाला संकुल प्राचार्य एवं संकुल/ विकासखंड स्रोत समन्वयक: प्रत्येक शाला में कार्यक्रम क्रियान्वयन में सहयोग
    - शाला प्रबन्धन समिति एवं सीखने में सहयोग देने वाले समुदाय- बच्चों की नियमित उपस्थिति एवं विशेष कोचिंग
    - बड़ी कक्षाओं के बच्चे- बच्चों के साथ नियमित अभ्यास कार्य एवं प्रत्येक दक्षता हासिल करने हेतु आकलन
    - स्थानीय भाषा के जानकार समुदाय: बच्चों को उनकी भाषा में सिखाने हेतु स्थानीय सामग्री

जिन बच्चों को जो दक्षताएं अच्छे से आती हैं उन्हें ऐसे बच्चों को जिन्हें उन दक्षताओं को सीखने समझने की आवश्यकता है, के साथ जोड़ी बनाकर एक दूसरे से सीखने के अवसर देते हुए शत-प्रतिशत बच्चों में सभी दक्षताएं हासिल करवाएं. यदि कोई दक्षता ऐसी है जिसे अधिकांश बच्चे नहीं कर पा रहे हैं, उन पर फिर से कुछ नए तरीकों से काम करने की आवश्यकता होगी. उद्देश्य यह है कि हमें अपने क्षेत्र के शत प्रतिशत बच्चों में इन दक्षताओं को हासिल करवाना होगा. इस दौरान हो सकता है कि बहुत सी दक्षताएं ऐसी हो जो पिछली कक्षाओं की हों पर बच्चों को अगली कक्षा में पुनः सिखाने की आवश्यकता हो. ऐसा नहीं करने पर वे आगे की दक्षताओं पर अपनी समझ विकसित नहीं कर पाएंगे. छलांग कार्यक्रम के माध्यम से आपके क्षेत्र के प्रत्येक बच्चे चाहे वह स्कूल जा रहे हों या स्कूल से बाहर हों., सबको निर्धारित दक्षताएं शीघ्रताशीघ्र हासिल करवा लेना अत्यंत आवश्यक होगा. हम एक बच्चे को भी पीछे नहीं छोड़ सकते.

एजेंडा तीन: स्थानीय भाषा में सामग्री निर्माण

आपको अपने क्षेत्र में प्रचलित स्थानीय भाषा में छोटे बच्चों को सिखाने हेतु स्थानीय भाषा में सामग्री तैयार करनी होगी. इसके लिए आपको निम्नलिखित काम अपने संकुल एवं विकासखंड के साथियों के साथ मिलकर करने होंगे-

- जिले की प्रचलित भाषा में सामग्री निर्माण हेतु एक कुशल टीम का गठन एवं उन्हें जिम्मेदारियां
- जिले में प्रचलित भाषा में उपयोग में आने वाली वर्णमाला का फ्लेश कार्ड
- कक्षा पहली से पांचवीं तक की पुस्तकों में आये ऐसे शब्द जिनको चित्र के माध्यम से समझाया जा सके, की सूची बनाकर उनका अंग्रेजी एवं स्थानीय भाषा में अनुवाद वाले फ्लेश कार्ड
- स्थानीय भाषा / हिन्दी में चार चार लाइन के पठन सामग्री/ गीत आदि फ्लेश कार्ड में उपयोग में लाए जाने हेतु
- सभी तैयार सामग्री को स्पष्ट टंकित कर प्रूफ रीडिंग कर त्रुटि-रहित मुद्रण के लिए तैयार कर भेजा जाना
- गणित के जोड़, घटाव, गुणा एवं भाग के कुछ सवाल सहित फ्लेश कार्ड
- आसपास के पर्यावरण से संबंधित जानकारी युक्त फ्लेश कार्ड
- स्थानीय भाषा में डिक्शनरी निर्माण जिसमें स्पष्ट वर्गीकरण कर शब्दों को प्रस्तुत किया जा सके- जैसे आभूषण, भोज्य पदार्थ
- हमारे साथ बहुत से ऐसे शिक्षक हैं जिन्हें बच्चों की भाषा नहीं आती. ऐसे शिक्षकों के लिए हम वार्तालाप पुस्तिका तैयार कर दे सकते हैं. इस वार्तालाप पुस्तिका में कक्षा के भीतर शिक्षकों एवं बच्चों के बीच के वार्तालाप की संभावनाओं को स्थानीय भाषा में अनुवाद कर शिक्षकों को दैनिक उपयोग के लिए उपलब्ध करवाया जाता है

उपरोक्तानुसार प्रत्येक भाषा में कम से कम दो सौ फ्लेश कार्ड बनाकर स्कूलों में उपयोग करने प्रदाय करना होगा.

इस सत्र में भी समुदाय के बड़े-बुजुर्गों के माध्यम से बच्चों को छोटी एवं रोचक स्थानीय कहानियाँ सुनाई जाएँगी. पर इस बार इन कहानियों का दस्तावेजीकरण किया जाएगा. इसके लिए आपको अपने संकुल एवं विकासखंड में मिलकर निम्नलिखित कार्य करने होंगे-

- स्कूल या समुदाय के मध्य बड़े-बुजुर्गों को आमंत्रित कर कहानी उत्सव का आयोजन करें
- सुनाई गयी बेहतर स्थानीय कहानियों को लिख लेवें और उसको बच्चों के हिसाब से लिखें और तैयार करें
- आप चाहें तो उनके द्वारा बोली जा रही कहानियों को मोबाइल से रिकार्ड एवं लिखकर भी रख सकते हैं
- कहानियों को हिन्दी एवं स्थानीय भाषा दोनों में तैयार करना आवश्यक होगा
- स्थानीय चित्रकारों से इन कहानियों के लिए उचित चित्र भी तैयार करवाएँगे
- प्रत्येक शाला कम से कम पांच कहानियों की पुस्तक तैयार करें
- कहानियों को हम बिग बुक के रूप में तैयार कर सकते हैं. बिग बुक तैयार करने की विधि नेट में देखें
- विकासखंड स्तर पर शालाओं के मध्य प्रतियोगिता का आयोजन कर सबसे बेहतर कहानियों को पुरस्कृत करें
- ऐसी कहानियों को हम आगामी राउंड में स्कूलों में मुद्रण के लिए तैयार हो रही सूची में शामिल कर सकते हैं
- कुछ कहानियों को हम पोडकास्ट के रूप में भी विकसित कर सकते हैं.
- प्रत्येक विकासखंड में कम से कम पांच उम्दा क्वालिटी के पोडकास्ट तैयार किए जाएँ
- पोडकास्ट में स्थानीय भाषा में उपयोग में लाई जाने वाली आवाज उस भाषा का नियमित उपयोग करने वाले व्यक्ति का ही लेवें
- पोडकास्ट में चयनित कहानी का हिन्दी में भी अनुवाद होना चाहिए
- पोडकास्ट में कहानी को बच्चों को कहानी सुनाने के स्टाइल में ही बोलने की कोशिश करें

अपने अपने संकुल एवं विकासखंड में भाषा समूह के अनुसार टीम बनाकर वर्णमाला चार्ट, फ्लेश कार्ड, डिक्शनरी, वार्तालाप पुस्तिका, बिग बुक्स, कहानी पुस्तिका, पोडकास्ट आदि बनाकर बच्चों के साथ उपयोग कर समझ बना सकते हैं.

एजेंडा चार: बच्चों के सीखने हेतु खिलौना निर्माण

FLN के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु toy pedagogy पर काम करने का सुझाव दिया गया है. इस हेतु शिक्षकों के प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी द्वारा वेबीनारों की श्रंखला, खिलौना बनाने के वीडियोज, पुस्तकें आदि तैयार कर शिक्षकों के उपयोग के लिए उपलब्ध करवाई गयी है. यहाँ एक बात जो अक्सर हम और हमारे शिक्षक भूल जाते हैं या ध्यान नहीं दे पाते, वह है- खिलौनों का उपयोग कर बच्चों को कैसे सिखाएंगे. यहाँ इस बात का ध्यान रखना होगा कि बच्चे खिलौनों का उपयोग करते समय आपस में खूब बात भी करते चलें. इस बहाने वे निपुण भारत के लक्ष्य- प्रभावी संवाद स्थापित करने में सफल हो सकेंगे (effective Communicator)

खिलौनों से सीखने के प्रक्रिया को मजबूत करने इस बार निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जा रही है-

- राष्ट्रीय अविष्कार अभियान के माध्यम से विकासखंड स्तर पर कबाड़ से जुगाड़ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए
- प्रत्येक विकासखंड में व्यापक प्रचार प्रसार कर सर्वोत्कृष्ट खिलौनों को प्रतियोगिता में शामिल करवाएं
- विकासखंड स्तर पर चयनित बेस्ट खिलौनों को बनाने के तरीकों पर शिक्षकों को संकुल स्तर पर क्षमता विकास का आयोजन मासिक समीक्षा सह प्रशिक्षण बैठक में करवाएं
- इस प्रकार सीखे गए खिलौनों को शामिल करते हुए प्रत्येक प्राथमिक शाला में एक खिलौना कार्नर बनाया जाए
- संकुल स्तर से विकासखंड को एक सर्टिफिकेट दिया जाए जिसके माध्यम से इस बात को प्रमाणित किया जाए कि संकुल स्तर पर मासिक बैठक में सीखकर संकुल की प्रत्येक प्राथमिक शाला में खिलौना कार्नर बनाकर बच्चों द्वारा उनका उपयोग किया जा रहा है

संकुल स्तर पर प्रथम मासिक बैठक में सभी कक्षाओं में उस कक्षा का लर्निंग आउटकम लगाकर उसका उपयोग कर पाना एवं द्वितीय मासिक बैठक में सभी प्राथमिक शालाओं में खिलौना कार्नर बनाकर उसका नियमित उपयोग प्रारंभ हो जाना चाहिए.

एजेंडा पांच: कक्षाओं की वर्चुअल मानिटरिंग/ निरीक्षण

FLN के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु कक्षाओं का नियमित निरीक्षण करना आवश्यक है. निरीक्षण के आधार पर देखी गयी कमियों को शालाओं को तत्काल सुधारने हेतु निर्देशित करना होगा. वरना निरीक्षण एक औपचारिकता मात्र होकर रह जाएगी. आपके जिले में नियुक्त प्रत्येक PMU अपने लिए निर्धारित विकासखंड में प्रतिदिन कम से कम तीन प्राथमिक स्कूलों का निरीक्षण वर्चुअल माध्यम से करेंगे. इसी प्रकार से जिले एवं विकासखंड स्तर के अधिकारी भी समय निकालकर स्कूलों के वर्चुअल निरीक्षण का काम करते हुए अकादमिक कसावट लाने की दिशा में काम करेंगे. निरीक्षण के दौरान मुख्यतः निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देते हुए सभी प्राथमिक शालाओं में इन बातों को लागू करवाए जाने हेतु माहौल बनाना होगा-

- क्या मुस्कान पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों को बच्चे पढ़ पा रहे हैं ?
- क्या बच्चे गणित के सरल सवाल अच्छे से समझ के साथ हल कर पा रहे हैं ?
- क्या बच्चों को जोड़ी में बिठाकर एक दूसरे से सीखने के अवसर दिए जा रहे हैं ?
- क्या स्कूल में खिलौना कार्नर बनाकर उसका उपयोग हो रहा है ?
- क्या शिक्षक द्वारा पॉकेट बोर्ड और फ्लेश कार्ड का नियमित उपयोग किया जा रहा है ?
- क्या बच्चों को स्लेट देते हुए उस पर अभ्यास करवाया जा रहा है ?
- क्या बच्चों को अभ्यास पुस्तिकाओं पर कार्य एवं उनके कार्यों पर फीडबैक दिया जा रहा है ?
- क्या बच्चों के साथ NAS पर नियमित अभ्यास करवाया जा रहा है ?
- क्या छोटे बच्चों के लिए स्थानीय भाषा में सामग्री बनाकर उसका उपयोग किया जा रहा है ?
- क्या सभी कक्षाओं में उस कक्षा के लिए निर्धारित लर्निंग आउटकम का प्रदर्शन किया गया है ?

सभी शिक्षक साथियों से अनुरोध है कि निरीक्षण के दौरान देखे जाने वाले बिन्दुओं पर वे अपने अपने स्कूलों में इस प्रकार से बेहतर कार्य कर लेवें कि निरीक्षण में सभी बिन्दुओं में हाँ आ सके

एजेंडा छह: जोड़ने-घटाने की अवधारणा पर कैसे काम करें ?

जोड़ना और घटाना सीखने को हम दो तरह से देख सकते है:

1. **शुरुआती स्तर (FLN) के बच्चों के साथ** (FLN स्तर के बच्चों के लिए) जिसमें कक्षा 1-2 स्तर के बच्चे शामिल हैं इनके साथ अवधारणा की समझ एवं उसके अभ्यास पर अधिक कार्य किए जाने की जरूरत है ।

2. **कक्षा 3 से 5 स्तर (कक्षा स्तर) के बच्चों के साथ** अवधारणा समझ के साथ- साथ अभ्यास एवं उच्च स्तरीय सोच पर ज़ोर दिये जाने की जरूरत है जिसे जुलाई-अगस्त के चर्चा पत्र मे उदाहरण के साथ जिक्र किया गया था।

(A) शुरुआती स्तर (FLN) के बच्चों के साथ जोड़ एवं घटाव पर काम कैसे करें?

जोड़ पर काम करते समय हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए- 1. गणितीय अवधारणाएँ अमूर्त होती हैं जैसे- जोड़ना, अतः प्रारम्भिक कक्षाओं में अधिकांश गतिविधियों को मूर्त वस्तुओं के माध्यम से कराया जाता है ताकि बच्चे दैनिक जीवन में प्रयोग किए जाने वाले अपनी गणितीय चिंतन का तार्किक तरीके से संबंध स्थापित करने में सक्षम हो सकें। सीखने-सिखाने का क्रम मूर्त से अमूर्त की ओर हो, तो बच्चों सीखने में बहुत आसानी होती है।

2. गणितीय अवधारणाएँ सोपान क्रमिक होती हैं, मुख्य उद्देश्य बच्चों को जोड़ की अवधारणा को स्पष्ट करना है किन्तु हम जानते हैं कि जब तक बच्चों में संख्या की समझ विकसित नहीं होगी, तब तक उन्हें ठीक ढंग से जोड़ की अवधारणा को नहीं सिखाया जा सकता। अतः सबसे पहले संख्या की समझ को अलग-अलग तरीकों से विकसित किया गया है केवल एक-दो उदाहरण से कोई अवधारणा स्पष्ट नहीं होता। इसीलिए हमें बच्चों को अलग-अलग तरीके से हल करने के लिए पर्याप्त अवसर देना चाहिए, पाठ्य पुस्तक में भी इसका भी पूरा ख्याल रखा गया है।

3. सिखाना, सीखने की प्रतिफल (Learning Outcomes) के आधार पर तय की जाती हैं सीखने के प्रतिफल/ सीखने की सम्प्राप्ति जिसका आशय यह है कि शैक्षणिक सत्र के अन्त में बच्चों को प्रत्येक विषय में क्या-क्या आ जाना चाहिए। अर्थात पूरे वर्ष के अंत में बच्चों को किस प्रकार की विषय वस्तु आ जाना चाहिए था जो अभी भी अपेक्षित है। बच्चों में अपेक्षाकृत प्रगति न हो तब इस संबंध में जरूर चर्चा की जाना चाहिए तथा पाठ्य पुस्तक के अलावा कार्य पत्रक जैसे अन्य संसाधनों का इस्तेमाल सीखने के प्रतिफल को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

4. ELPS रणनीति का इस्तेमाल करें प्रारम्भिक स्तर के बच्चों के साथ ELPS रणनीति के माध्यम से जोड़ तथा घटा की बेहतर समझ विकसित की जा सकती है। अमूर्त गणितीय अवधारणा को पढ़ाने के लिए **ELPS क्रम** का पालन करना बच्चों के सीखने- सिखाने में काफी मददगार होता है। इनके साथ ऊपर उल्लेखित सुझावात्मक गतिविधि की जानी चाहिए। (संलग्न पीडीएफ़ देखें)

pdf

(B) कक्षा 3 से 5 स्तर (कक्षा स्तर) के बच्चों के साथ जोड़ पर काम कैसे करें?

1. जोड़ने-घटाने के पूर्व अवधारणा की समझ पर पहले काम करें जोड़ना-घटाना सीखना ,संख्या समझ का एक मुख्य भाग है । यदि विद्यार्थी गिनती को अच्छी तरह से समझ चुका है तो वह निश्चित रूप से जोड़ व घटा की अवधारणा को समझता है। हम उनके गिनने के कौशलों का उपयोग करके उन्हें जोड़ना-घटाना सीखा सकते हैं। एक समूह की वस्तुओं को गिनना फिर दूसरे समूह की वस्तुओं को गिनना और अंत में दोनों समूह को मिलाकर बनने वाले नए समूह को गिनना जोड़ने की अवधारणा से संबंध रखता है। इसी तरह एक समूह की वस्तुओं को गिनना फिर उसमें से कुछ वस्तुओं को अलग करके बची हुई वस्तुओं को गिनना, घटाने की अवधारणा से संबंध रखता है।

2. जोड़ने-घटाने के संदर्भ को पहचान को जानना जरूरी होता है

जोड़ के संदर्भ में मुख्यतः दो स्थितियां होती हैं **पहला एकत्रीकरण** - जब हमें एक मात्रा प्राप्त करने के लिए दो या दो से अधिक मात्राओं (जैसे वस्तुओं, धन, दूरी, मात्रा, आदि) को संयोजित करने की आवश्यकता होती है। (उदाहरण के लिए, यदि मुन्नी के पास 3 पेंसिलें हैं और मुन्ना के पास 2, तो कुल कितनी पेंसिलें हैं?) **दूसरा वृद्धि करण** - जहां हमें एक मात्रा को कुछ मात्रा में बढ़ाना होता है, और बढ़ा हुआ मूल्य प्राप्त करना होता है। (उदाहरण के लिए, एक डाल पर 4 चिड़ियाँ बैठी है थोड़ी देर बाद उस डाल पर 3 और चिड़ियाँ आ जाती हैं, अब उस डाल में कितनी चिड़ियाँ बैठी हैं?) **घटाने के संदर्भ में भी मुख्यतः चार स्थितियां होती हैं, हिस्से करना-** एक विद्यालय में 350 बच्चे हैं । यदि 162 लड़कियां हैं । तो लड़कों की संख्या बताओ । (देखें पाठ्य पुस्तक कक्षा-3 पृष्ठ-61) **कमी मालूम करना-** रेल के एक डिब्बे में 72 सीटें हैं । यदि डिब्बे में 112 यात्री हैं तो बताओ, कितने यात्रियों को सीटें नहीं मिली? (देखें पाठ्य पुस्तक कक्षा-3 पृष्ठ-61) **तुलना करना-** मोहन के पास 70 रुपये और मीता के पास 62 रुपये हैं । बताओ मोहन के पास मीता से कितने रुपये अधिक हैं ? (देखें पाठ्य पुस्तक कक्षा-3 पृष्ठ-46) **पूरक जोड़ पता करना-** 55 में कितना जोड़ें कि 92 हो जाये । (देखें पाठ्य पुस्तक कक्षा-3 पृष्ठ-47) **एक शिक्षक होने के नाते हमें यह ध्यान रखना जरूरी है कि हमारे बच्चे जोड़ने-घटाने के संदर्भों को उदाहरण के माध्यम से समझें ताकि वे इबारती सवालों को करते समय सही संक्रिया का चयन कर सकें।**

3. अवलोकन करें और मदद करें अवधारणा की समझ सुदृढ़ करने के लिए उन्हें अलग-अलग प्रकार के जोड़ के प्रश्न हल करने के लिए दें। शिक्षक विद्यार्थियों के क्रियाकलापों का अवलोकन करें तथा यह जानने का प्रयास करें कि विद्यार्थी 3 अंकीय संख्याओं को कैसे जोड़ते हैं ? जरूरत के अनुसार उन्हें मानक विधि से परिचित कराते चलें।
4. मार्गदर्शन करें मार्गदर्शन बच्चों को सीखने में मदद करता है। बच्चों के सीखने की गति को ध्यान में रखते हुये उन्हें समूह तथा जोड़े में काम करने का अवसर अवश्य दें जिससे उनके सीखने की गति तेज होगी साथ ही उनमें आत्मविश्वास बढ़ेगा ।

5. कक्षा अनुरूप सीखने के प्रतिफल का ध्यान रखें

FLN स्तर जोड़ना			
पाठ का नाम	कक्षा	पृष्ठ	सीखने के प्रतिफल
जोड़ना	पहली	45-51	M-105, M-107
जोड़ना	दूसरी	38-57	M-204,
जोड़ना- घटाना-1 एवं 2	तीसरी	35-62	M-303 M-307
जोड़ना – घटाना	चौथी	11-30	M-403
संक्रियाएँ	पाँचवी	16-21	M-502 M-504

6. कार्य पत्रक के माध्यम से कार्य करें

कार्य पत्रक प्रत्येक बच्चों को सीखने का अवसर उपलब्ध कराता है जिससे सीखने की प्रक्रिया को बल मिलता है। किसी भी विषय-वस्तु पर अवधारणा की स्पष्ट समझ बन जाने के बाद बच्चों को सहज तरीके से अभ्यास के अवसर प्रदान करने में काफ़ी मददगार हो सकता है। बेहतर कार्य पत्रक रुचि पूर्ण तरीके से सीखने की प्रक्रिया का विस्तार तथा सृजनात्मक के अवसर प्रदान करता है। कार्य पत्रक द्वारा किसी बच्चे के सीखे हुये कौशल का आकलन करना संभव है साथ ही उसने क्या सीखा और क्या नहीं सीख पाया, इसका स्पष्ट साक्ष्य भी उसी कार्य पत्रक से मिल जाता है। कार्य पत्रक का उपयोग करने तथा उनको संकलित रखने से एक शिक्षक के पास , बच्चों के सीखने का ठोस प्रमाण उपलब्ध होता है, जो शिक्षक को बच्चे का आकलन करने एवं आगे की योजना बनाने में मदद करेंगी। (कार्य पत्रक हेतु क्लिक करें)

pdf

एजेंडा सात: रचनात्मक लेखन

पिछले दो चर्चा पत्रों में दो अलग प्रकार के लेखन की प्रक्रियाओं से आपको परिचित कराया गया था। जिसमें कौशल आधारित लेखन और निर्देशित लेखन पर विस्तार से चर्चा की गयी है। रचनात्मक लेखन इस प्रक्रिया का अगला पड़ाव है। इस लेखन के अंतर्गत बच्चे दी गयी विषयवस्तु पर अपने अनुभव और कल्पना के आधार मौलिक विचारों को लिखने का प्रयास करते हैं। लेखन की इस तरीके में बच्चे की कल्पना, अनुभव व रचनात्मकता की पूरी स्वतन्त्रता होती हैं, जैसे - अधूरी कहानी को पूरा करना, कहानी की कोई घटना बदलने पर उसके परिणाम का अनुमान लगाना। किसी विषय पर अपनी बात को लिखना।

रचनात्मक लेखन का मतलब होता है किसी विचार, भावना, अनुभव, अथवा कल्पना को शब्दों के माध्यम से सजाना या व्यक्त करना जिसमें लेखन की किसी भी विधा को शामिल किया जा सकता है। शुरुआती कक्षा में यह गोदागादी और कुछ चित्रों के निर्माण से लेकर कक्षा तीन, चार, पांच तक छोटे-छोटे अनुभवों को अनुच्छेद में लिखने की अपेक्षा होती हैं। यहीं पूर्व माध्यमिक कक्षाओं तक आते आते बच्चों से कविता, कहानी, निबंध, नाटक, लघुकथा, विचार-विमर्श, यात्रा वर्णन, आत्मकथा, उपन्यास आदि शामिल हो सकते हैं। इसमें विचारों को व्यक्त करने के लिए अलंकार, छंद, और सम्बद्ध शैली का उपयोग किया जाता है।

रचनात्मक लेखन का मुख्य उद्देश्य अब तक क्या होता रहा है के साथ-साथ क्या हो सकता है का अनुमान के अलग-अलग सन्दर्भों में उसके प्रभाव का भी विचार लिखे जा सके। रचनात्मक लेखन एक शिल्प होता है जिसमें लेखक अपनी भाषा और कल्पना का इस्तेमाल करके रचता है। यह लेखक के भावों और विचारों को उभारता है और पाठकों को विचार करने के लिए प्रश्न भी छोड़ता है। रचनात्मक लेखन एक ऐसी कला है जिसमें शब्दों का उपयोग करके विचारों, भावनाओं, अनुभवों और आभासों को सुंदर और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

बच्चों के द्वारा लिखे गए रचनात्मक लेखन के कुछ उदाहरण :- अपने मनपसंद मौसम के बारे में लिखते हुए बच्चों ने अपने भावों को व्यक्त किया है ।

pdf

रचनात्मक लेखन क्यों ?

1. बच्चे आमतौर पर लिखने पढ़ने को शाला गत प्रक्रिया या कक्षा गत प्रक्रिया से ही जोड़ कर देखते हैं।
2. इसके पीछे एक बड़ा कारण यह हो सकता हैं कि शिक्षक यह मान लेते हैं कि यदि बच्चे लिखने की बुनियादी कौशल में निपुणता हासिल कर लें तो मौलिक लेखन वो वे स्वयं ही कर लेंगे । हालांकि, अन्य सभी कौशलों की तरह लिखना भी एक कौशल है। और इस कौशल को विकसित करने के लिए विविध मौके देने की जरूरत होती हैं, क्योंकि लिखना लिखने से ही आता है।
3. अभिव्यक्ति का माध्यम: रचनात्मक लेखन एक बच्चे के भावों, विचारों, और अनुभवों को समझाने और व्यक्त करने का एक अच्छा माध्यम होता है। यह उन्हें अपने मन के अंदर होने वाले विचारों को समझने और स्वतंत्रता से उन्हें व्यक्त करने की प्रेरणा देता है।
4. भाषा और व्याकरण कौशल का विकास: रचनात्मक लेखन बच्चों के भाषा और व्याकरण कौशल को सुधारने में मदद करता है। यह उन्हें सही शब्दों का चयन करने, वाक्यों को संरचित करने, और सही व्याकरण नियमों का पालन करने में सक्षम बनाता है।
5. रचनात्मकता का विकास: रचनात्मक लेखन बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ाता है। इससे वे अपने मन के भावों और विचारों को एक नई और रुचिकर तरीके से व्यक्त कर सकते हैं, जिससे उनमें अधिक उत्साह और समर्थन बना रहता है।
6. विचारशक्ति का विकास: रचनात्मक लेखन बच्चों की विचारशक्ति को बढ़ाता है। इसके माध्यम से वे नए विचारों को खोजते हैं, अपनी दृष्टि को समृद्ध करते हैं, और समस्याओं का समाधान ढूंढते हैं।
7. सृजनात्मक खेल: रचनात्मक लेखन बच्चों के लिए एक सृजनात्मक और मनोरंजक खेल की तरह होता है। वे खुद को एक नई दुनिया में खो जाते हैं और विचारों के साथ खेलते हैं, जो उन्हें संतुष्टि और संतोष का अनुभव करवाता है।

8. स्वतंत्रता की अनुभूति: रचनात्मक लेखन बच्चों को स्वतंत्रता के अनुभव को देता है। इसमें वे अपने विचारों को खुले रूप से व्यक्त करते हैं और अपने अन्दर के संसार को बाहर लाते हैं, जो उन्हें आत्म-विश्वास की भावना देता है।

इन सभी कारणों से स्पष्ट है कि रचनात्मक लेखन छोटे बच्चों के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण और उपयोगी उपाय है। इससे वे अपने मन के भावों को संवेदनशीलता के साथ लिखने की ओर अग्रसर होते हैं।

रचनात्मक लेखन को विकसित करने के लिए विविध गतिविधियाँ –

रचनात्मक लेखन की सारी प्रक्रियाएँ कक्षा में पाठ पढ़ाने के दौरान तक सीमित नही हैं। हमें कक्षा के दायरों से बाहर भी रचनात्मक लेखन के अवसरों को तलाश कर उनका उपयोग करना होगा एवं इन गतिविधियों को करने के लिए समय सारणी में स्थान बनाना जैसे कुछ गतिविधियों के नाम इस प्रकार हैं ।

1 . प्रार्थना सभा में मौलिक लेखन का प्रस्तुतीकरण – हम अपने विद्यालय में रोज प्रार्थना सभा का आयोजन करते हैं जिसमें राज्यगीत, राष्ट्रगीत व राष्ट्रगान के साथ कुछ रचनात्मक कार्यों को करते हैं । इनके अलावा इन विषयों पर लिखकर प्रार्थना सभा में प्रस्तुत करने के लिए कहा जा सकता है ।

छुट्टी का एक दिन -

आपके विद्यालय में जितने छात्र हैं उन सबको छुट्टी के दिन वे क्या करते हैं और क्या करना चाहते हैं? इस पर विचार करके एक पेज पर लिखे । अपने पेपर को जब तक प्रार्थना सभा में सुना नही देते उसे अपने पास ही रखे रहे। प्रार्थना सभा में किसी एक कक्षा के दो अलग-अलग विद्यार्थियों को अपने लिखे हुए को पढ़ने के लिए कहे । जो बच्चे अपने अनुभव को पढ़ ले उसे कक्षा में एक निश्चित जगह पर प्रदर्शित करने के लिए कहें।

घर विद्यालय और खेल के नियम - इस गतिविधि में विद्यार्थियों विभिन्न जगहों के लिए कई प्रकार के अघोषित नियम होते हैं वे अगर उन जगहों पर बार-बार गए हो तो वहाँ के नियम क्या हैं? उन्हे लिखना । जैसे रेलवे स्टेशन के नियम क्या है? पहले इस पर चर्चा करें । जैसे -रेलवे स्टेशन में जाने के लिए आप किसी जगह जा रहे हैं तो उसके लिए ट्रेन की टिकट खरीदनी होती है । किसी जगह पर जा नही रहे तो प्लेटफार्म का टिकट खरीदना होता है ।

इसी प्रकार से विभिन्न जगहों के नियम क्या होते हैं उन्हें लिखवाना और प्रार्थना सभा में पढ़ने के लिए कहना है ।

2 . साप्ताहिक गतिविधि – बेगलेस डे के दिन बच्चों से ये कार्य करवाएँ ।

कविता पेड़ – बच्चों को सफ़ेद कागज दे पहले से कुछ तुकांत पंक्तियाँ बोर्ड पर लिखे शेष पंक्तियाँ विद्यार्थीयों को पूरा करने के लिए जैसे –

मेरे घर में हैं एक बिल्ली ---------------------------- दिल्ली, झिल्ली, खिल्ली, इल्ली, तिल्ली।

ऐसी कुछ कविताओं को बातचीत कर लिखवायें। इन कविताओं को कागज पर लिखने के लिए कहे । पुराने समाचार पत्र को कट आउट की तरह कटवाएँ । इन कविताओं को उस पेड़ पर चिपकाये । समय-समय पर कविता पेड़ के पत्तों को बदलते रहे ।

कहानी पेड़ -

बच्चों को सफ़ेद कागज दें । पहले से एक कहानी बनाने के लिए उसके कुछ वाक्य लिखे –

दो मेंढक आपस में बात कर रहे थे । बगल वाले तालाब के पास मेंढक मेला हो रहा है ....।

छात्रों को कुछ शब्दों का समूह दें और उससे उन्हें कहानी बनाने के लिए कहें – बादल, पेड़, बिजली, खेत, बाढ़, किसान, ऐसी कुछ कहानियों की शुरुआत पर बातचीत कर आगे लिखवायें, इन कहानियों को कागज पर लिखने के लिए कहें। पुराने समाचार पत्र को पेड़ कट आउट की तरह कटवाएँ । इन कहानियों को उस पेड़ पर चिपकाये। समय-समय पर कहानी पेड़ के पत्तों को नई कहानियों से बदलते रहें ।

3 . माह में एक बार -

बाल अखबार निर्माण – समय-समय पर कक्षा में, विद्यालय में गाँव, देश-विदेश में हुई घटनाओं पर बच्चों से चर्चा करते रहे। और उनसे उसके बारे में उन्हें क्या लगता है इस पर बात करें । एक समाचार पत्र का विश्लेषण करवाएँ 'क्या-क्या छपता है ?' विज्ञापन, क्लासिफाइड आदि पर ध्यान दिलाएँ । अपने विद्यालय के लिए उन्हें विज्ञापन बनाना हो, तो कैसे बनाएँगे उसे लिखने के लिए कहे । इस प्रकार से बच्चों का दुनिया के प्रति नजरिया नियमित रूप से निर्मित होता रहेगा। उनके द्वारा निर्मित इन समाचारों को एक समाचार पत्र की तरह निर्मित कर विद्यालय में एक निश्चित समयान्तराल में उसका प्रदर्शन और वाचन करना है ।

विज्ञापन निर्माण – विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के लिए विज्ञापन निर्मित करना हो तो किस प्रकार कर सकते हैं । उसके उद्देश्य और भाषा के विविध रचनात्मक प्रयोगों को समझ पाये ।

4 . विशेष अवसर पर –

आमंत्रण कार्ड – जीवन के कई विशेष अवसर पर हम अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को आमंत्रित करते हैं । आमंत्रण का एक तरीका आमंत्रण पत्रों को छापकर या मैसेज करना भी है। अलग-अलग अवसरों के लिए अलग-अलग तरह के आमंत्रण लिखे जाते हैं। कुछ रचनात्मक तरीकों से आमंत्रण निर्मित करने के लिए बच्चों के साथ एक निश्चित अंतराल में नियमित रूप से कार्य किया जाना चाहिए ।

शादी के कार्ड, छट्टी, शोक पत्र, गृह पूजा, दुकान पूजा, वाहन या आयुध पूजा, त्यौहारों के आमंत्रण ।

एजेंडा आठ: सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से स्थिति में सुधार

शिक्षकों को यह समझना होगा कि वे अकेले FLN के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकते. उन्हें इसके लिए अपने समुदाय के पास जाना होगा, उनसे सहयोग लेना होगा. स्कूल, घर और समुदाय मिलकर ही इतने कम समयसीमा में इस लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकेंगे. FLN हेतु समुदाय से अधिक से अधिक सहयोग लेने हेतु निम्नलिखित प्रयास किया जा सकता है-

- अपने क्षेत्र के सभी शालाओं के शाला प्रबन्धन समिति को सक्रिय रखने हेतु सभी आवश्यक प्रयास करना
- शाला प्रबन्धन समिति के प्रशिक्षण में आवश्यक सहयोग एवं उनकी बैठकों के आयोजन की ट्रेकिंग
- शाला प्रबन्धन समिति के माध्यम से FLN के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सफलता की कहानियों का संकलन
- स्कूलों के सोशियल ओडिट/अंगना म शिक्षा के माध्यम से जमीनी स्तर पर सीखने-सिखाने का माहौल बनाना
- समुदाय में टीम बनाकर शिक्षक विद्यार्थी नियमित उपस्थिति, ड्राप आउट पर नियन्त्रण, शिक्षक पालक बैठक
- समुदाय से शाला अवधि के अतिरिक्त समय में बच्चों को सीखने में सहयोग हेतु बड़ी कक्षाओं के बच्चों, युवाओं, सेवानिवृत्त व्यक्तियों का सहयोग लेना
- सभी शालाओं को कक्षावार कुछ प्रश्नपत्र बनाकर मुद्रित कर उपलब्ध करवाए गए हैं. इन प्रश्नों के आधार पर प्रत्येक कक्षा में बच्चों की सेम्पल जांच करने की प्रक्रिया जारी रखें
- सुघ्घर पढ़वैय्या योजना के अंतर्गत अधिक से अधिक शालाओं को अपना आकलन करने चुनौती देने प्रेरित करना
- समुदाय से बड़े-बुजुर्गों को आमंत्रित कर स्थानीय कहानियाँ सुनाने का अवसर दिया जा सकता है. इन कहानियों को रिकार्ड कर उनका पोडकास्ट बनाकर साझा किया जा सकता है
- अंगना म शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से माताओं को जोड़कर बच्चों को सीखने में सहयोग लेना
- घर पर बच्चों से स्कूल में दिन भर की गई गतिविधियों एवं सीखी बातों पर चर्चा कर यह समझने का प्रयास करना कि स्कूल में ठीक से पढाई हो रही है अथवा नहीं

एजेंडा नौ: FLN के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षक की भूमिका

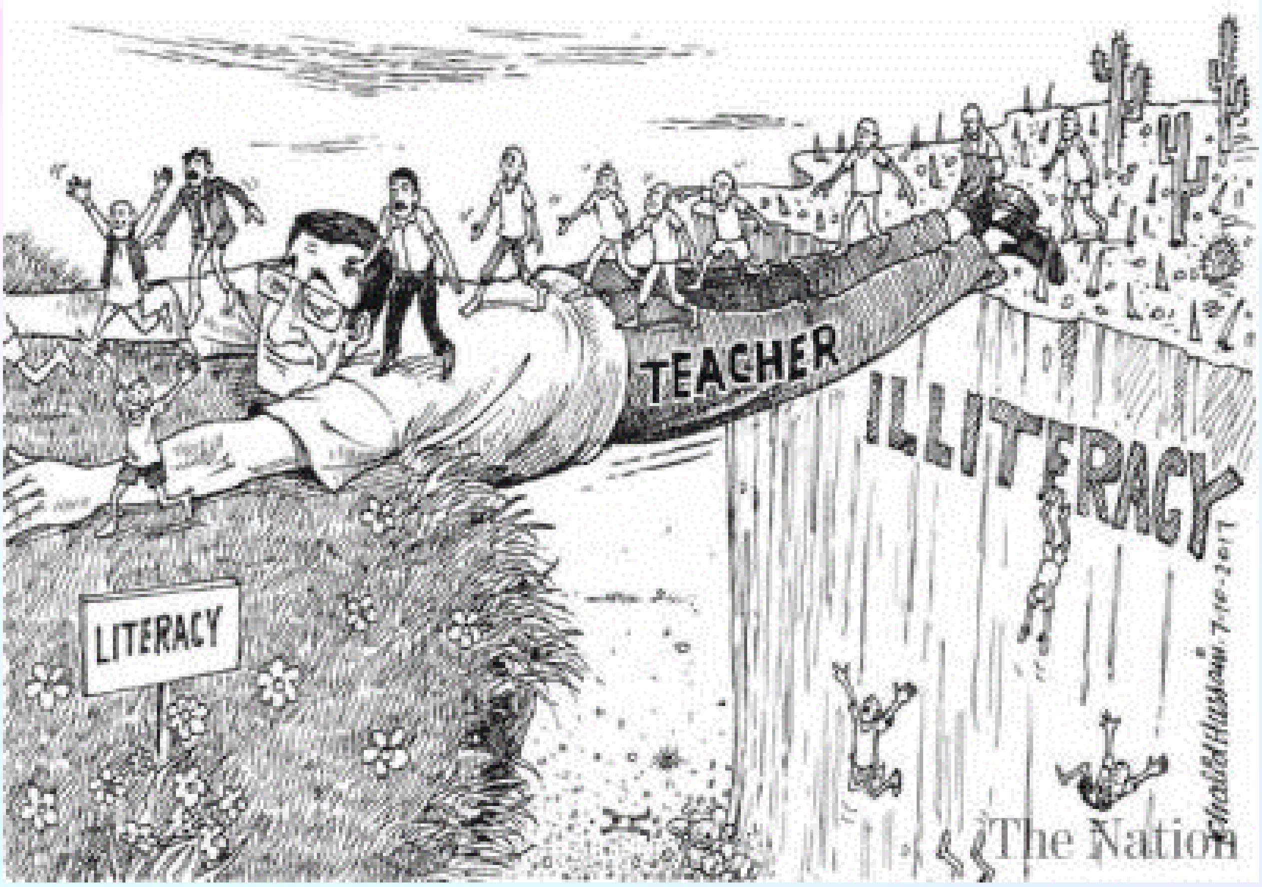

पिछले सभी सर्वे में बच्चों की स्थिति प्रायः जस की तस दिखाई देती है. आप असर एक पिछले दस वर्षों से अधिक का डाटा देख लें, हम भाषा और गणित में थोड़ा बहुत ऊपर नीचे होते रहते हैं. विभिन्न प्रयासों के बावजूद हमें छलांग मारने का अवसर नहीं मिला है,

अब हमें बहुत ही कम और सीमित समय में हमारे बच्चों की उपलब्धि 100% तक लानी है. वर्ष 2026-27 तक कक्षा तीन तक के सभी बच्चों में उनके कक्षावार दक्षताएं हासिल हो जानी चाहिए., पिछले दस साल से अधिक यदि हम एक मामले में तीस प्रतिशत थे तो अब हम तीन वर्षों में तीस प्रतिशत से सीधे सौ प्रतिशत तक जाना चाहते हैं. यह एक बहुत मुश्किल और लगभग असंभव जैसा लक्ष्य है. पर यदि आप देखेंगे कि क्या क्या हमें अपने बच्चों को सिखाना है तब आपको अपने आप पर शर्म आयेगी, इतने वर्षों तक बच्चे हमारे पास होते हुए भी हम बच्चों को बहुत मामूली चीजें भी नहीं सिखा पा रहे हैं,

यदि पुराने अनुभवों के आधार पर FLN के लक्ष्यों को समय पर प्राप्त करना है तो हम सभी शिक्षकों को ख़ूब मेहनत करनी पड़ेगी, रोजाना जैसे काम करने से स्थिति में सुधार नहीं हो पाएगा. ऐसे में आप क्या क्या करना चाहेंगे कि लक्ष्य समय पर प्राप्त हो ?

- प्रत्येक बच्चे के लर्निंग आउटकम में उनकी वर्तमान स्थिति को कैसे जानेंगे ?
- प्रत्येक बच्चे में सभी निर्धारित लर्निंग आउटकम हासिल हो जाए, इसके लिए आप क्या क्या करेंगे ?
- शाला में एवं परिसर के आसपास बच्चों को सीखने के लिए प्रिंट- रिच वातावरण कैसे बनाएंगे ?
- बच्चों को एक दूसरे से सीखने एवं जोड़ी में बैठकर सीखने के अवसर कैसे देंगे ?
- कक्षा में खिलौना कार्नर बनाकर बच्चों को उसका उपयोग कैसे करने देंगे ?
- बच्चों के सीखने में सहयोग हेतु समुदाय का सहयोग कैसे लेंगे ?
- अनियमित, पीछे छूट रहे एवं शाळा से बाहर के बच्चों में उनके आयु अनुरूप FLN के लक्ष्य को कैसे प्राप्त करवाएंगे ?

एजेंडा दस: FLN के अंतर्गत स्पीड रीडिंग

एक औसत व्यक्ति लगभग दो सौ शब्द प्रति मिनट की स्पीड से पढ़ सकता है जिसे अभ्यास से छह सौ शब्द तक बढाया जा सकता है. आप लोग अपने अपने समझ के साथ पढने की स्पीड देखने, जांचने का प्रयास करें, इसके लिए ऍफ़ एल एन के अंतर्गत दिए किसी शिक्षक संदर्शिका को पढ़कर कुछ प्रश्नों के जवाब देवें.. अआपके संकुल में सबसे अधिक स्पीड से पढने वाले शिक्षक कौन हैं ?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कक्षा दो के बच्चों को 40-60 शब्द प्रति मिनट की स्पीड में पढने का कौशल विकसित करना है. साथ ही पढ़े हुए हिस्से से पूछे गए प्रश्नों के सही जवाब भी देना आना चाहिए ताकि यह समझ में आए कि बच्चे समझ के साथ पढ़ पा रहे हैं. इसी प्रकार आगे की कक्षाओं में 60 शब्द प्रति मिनट से अधिक स्पीड एवं समझ के साथ बच्चों को पढना आ जाना चाहिए.

स्पीड रीडिंग *एक व्यक्ति की तेज गति से टेक्स्ट को समझने की क्षमता है। यहां शब्द को समझना महत्वपूर्ण है; न कि केवल यंत्रवत् इसे पढ़ना। भले ही आप किसी बच्चे को शब्दों को बड़ी तेजी से निगलना सिखाने में कामयाब हो जाएं, लेकिन साथ ही वह जो कुछ भी पढ़ता है उसे समझ नहीं पाएगा, तो स्पीड रीडिंग एक बेकार कौशल होगा.*

स्पीड रीडिंग पर अभ्यास के लिए उच्च प्राथमिक शालाओं को प्रदत्त CIIL की द्विभाषी पुस्तकों को प्रतिदिन बच्चों को पढने का अवसर देवें. जब वे उन पुस्तकों के साथ परिचित हो जाएं और ठीक से समझ के साथ पढने लगें, तब स्टॉप वाच या घड़ी के साथ उन कहानियों को पढने के समय को सेकंड में दर्ज करना शुरू करें, उन कहानियों के अंत में कुछ प्रश्न दी होंगे, उन प्रश्नों के जवाब देते हुए सही गलत की जानकारी लेवें. सभी उच्च प्राथमिक शालाओं में आपको ऐसी लगभग दो सौ से अधिक कहानी पुस्तकें मिल जाएंगे. इन्हीं पुस्तकों को प्राथमिक के कक्षा तीन एवं आगे के बच्चों से अभ्यास करवाएं. आप चाहें तो हिन्दी के बाद अंग्रेजी में भी स्पीड रीडिंग का अभ्यास कर सकते है. इसी प्रकार प्राथमिक में स्टोरीव्हीव्हार की 180 पुस्तकें मुस्कान पुस्तकालय में उपलब्ध करवाई गयी हैं.. कक्षा पहली दूसरी के बच्चों से उन्हें पढने का अभ्यास करवाएं.. यह गणना करें कि बच्चे एक मिनट में कितने शब्द समझ के साथ पढ़ पा रहे हैं ?